11 SEP 2019

ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे Time allowed: Three Hours	DTVF/19(JS)–ESY-**E3**	अधिकतम अंक: 250 Maximum Marks: 250

Name: Manoj Kumar **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** AWAKE-19/0022

Center & Date: Delhi 10/09/19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: _____

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

_____

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)

Evaluator (Signature)

_____

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)

Reviewer (Signature)

खंड A और B में प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबंध लिखिये, जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो: 125 × 2 = 250

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Section A and B, in about 1000–1200 words each: 125 × 2 = 250

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION–A

1. प्रौद्योगिकी वह सशक्त साधन है जो उम्मीद और अवसर के बीच की दूरी तय करता है।
   Technology is that powerful tool which covers the distance between hope and scope.
2. अन्नदाता का उद्धार किसी दया में नहीं बल्कि नवाचार में है।
   Farmer's emancipation lies in innovation rather than mercy.
3. भारत के वे अनिवार्य सामाजिक परिवर्तन जिन्हें आप आगामी कुछ दशकों में होता देखना चाहेंगे।
   The necessary social changes that you wish to see in India in the next few decades.
4. पारंपरिक मूल्यों के साथ आधुनिक विश्व की समस्याओं का समाधान तलाशती भारतीय विदेश नीति।
   India's foreign policy: Exploring solutions to the problems of the modern world with traditional values.

खंड–B / SECTION–B

1. सर्वोच्च शिक्षा वह है जो सिर्फ हमें जानकारी नहीं देती अपितु प्रकृति के साथ हमारे सह-अस्तित्व को भी सुनिश्चित करती है।
   The best education is that which not only gives us information, but also ensures our coexistence with nature.
2. राजनीति में आदर्श अपेक्षित भी है और उपेक्षित भी।
   Ideals in politics are required as well as neglected.
3. समान के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिये और असमान के साथ असमान।
   Equals should be treated equally and unequals unequally.
4. उस समाज में स्वतंत्रता अर्थहीन है, जिसमें गलती करने की आज़ादी न हो।
   Liberty is meaningless in that society where there is no freedom to commit mistakes.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड–A / SECTION–A

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिख
चाहिये।
(Candidate must no
write on this margi

1. प्रौद्योगिकी वह सशक्त साधन है जो उम्मीद और अवसर के बीच की दूरी तय करता है।
   Technology is that powerful tool which covers the distance between hope and scope.
2. अन्नदाता का उद्धार किसी दया में नहीं बल्कि नवाचार में है।
   Farmer's emancipation lies in innovation rather than mercy.
3. भारत के वे अनिवार्य सामाजिक परिवर्तन जिन्हें आप आगामी कुछ दशकों में होता देखना चाहेंगे।
   The necessary social changes that you wish to see in India in the next few decades.
4. पारंपरिक मूल्यों के साथ आधुनिक विश्व की समस्याओं का समाधान तलाशती भारतीय विदेश नीति।
   India's foreign policy: Exploring solutions to the problems of the modern world with traditional values.

2. अन्नदाता का उद्धार किसी दया में नही बल्कि नवाचार में है।

"'भारत', मेरे सम्मान का
सबसे महान शब्द, जहाँ
कहीं भी प्रयोग किया जाए.
बाकी सब शब्द अर्थहीन हो
जाते हैं।
भारत का अर्थ किसी
दुष्यंत से नही बल्कि
खेत से है, जहां अन्न
अन उगता है।।"

'अन्नदाता' अर्थात किसान शब्द दिमाग में आते ही बरबस ही कवि पाश की ये पंक्तियाँ याद आ जाती हैं। साथ ही दिमाग में एक तस्वीर बन जाती है-खेत में काम कर रहे व्यक्ति की जो हड्डियों का

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

ढांचा मात्र दिखाई देता है जिसकी चमड़ी से खुन गायब है तथा चमड़ी हड्डियों से चिपक गयी है। या फिर एक ओर तस्वीर नजर आती है अखबारों की जिसमें किसान पेड़ से लटका हुआ है या हताश होकर फसल को देख रहा है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

भारत कृषकों का देश है यहाँ पर 70% आबादी खेती पर निर्भर है। गांधीजी तथा नेहरूजी ने खेती को भारत की 'आत्मा' बताया है। लेकिन आज हालात यह है कि अन्न पैदा करने वाला अन्नदाता ही परिस्थितियों से मजबूर होकर भूखा सोने को विवश है। आखिर ऐसा क्या है कि कृषि जिसे किसानों के लिए प्राणदायिनी कहा जाता है किसानों की दुर्दशा की जिम्मेदार बनती जा रही है।

प्राचीन काल से लेकर अब तक किसानों की दशा में अनेक परिवर्तन आए हैं। प्राचीन काल में किसानों की दुर्दशा आज की तरह नहीं थी। किसान खेती को पूज्य मानते थे। फिर आज उसी खेती को किसान अपने

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

बच्चों को क्यों नहीं करने देना चाहते हैं। क्यों वे खेती को अपनी आजीविका का मुख्य साधन बनाना चाहते?
हालाँकि आजादी के बाद सरकारों द्वारा समय-समय पर अनेक उपाय किए गए हैं। पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि तथा खाद्यान्न को प्रमुखता से रखा गया है। हरित क्रान्ति से उपज बढ़ाना इन्हीं सब का परिणाम है। लेकिन समय के साथ नए तकनीक तथा प्रयोगों को ना अपनाने के कारण किसानों की हालत में सुधार की बजाय गिरावट ही आयी है। किसानों में नई प्रवृत्तियों का विकास हुआ जैसे - आत्महत्या, कर्ज माफी के लिए प्रदर्शन, धरना, सब्जियों तथा उपज को सड़क पर फेंकना इत्यादि।
सरकार द्वारा किसानों को प्रेमचन्द जी के 'गोदान' उपन्यास के किसान की छवि से निकालने के अनेक प्रयास

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

किए गए हैं जैसे- ऋण माफ करना, न्यूनतम समर्थन मूल्य तय करना इत्यादि अनेक कार्यक्रम तथा नीतियाँ बनायी जा रही है।

आजादी के बाद अनेक सरकारें बनी लेकिन अनेक प्रयासों के बावजूद किसानों की स्थिति बदतर ही रही। सरकारों ने किसानों पर रहम दिखाते हुए उनके लिए अनेक लोक-लुभावन घोषणाएं की जिनमें किसानों का कर्ज माफ करना सभी सरकारों का शायद प्रिय रहा है। अभी हाल ही में राजस्थान, छत्तीसगढ़, M.P. में चुनावों के समय किसानों के कर्ज माफी संबंधी घोषणा प्रमुखता से छायी रही। इससे पहले भी अनेक सरकारों ने ऐसा किया है लेकिन स्थिति जस की तस बनी रही। इसलिए किसी ने सही कहा है- "अन्नदाता का उद्धार किसी दया में नहीं बल्कि नवाचार में है।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

किसानो के द्वारा बढ़ते ऋण संकट के कारण उनके आत्महत्या की प्रवृत्ति गंभीर चिंता का विषय है यह प्रवृत्ति बताती है कि खेती अब आजीविका का मुख्य साधन नहीं रही है बल्कि मानसिक दबाव का कारण बन रहा है। क्योंकि उस पर कर्ज चुकाने के बोझ के साथ-2 फसल की अच्छी पैदावार प्राप्त करने का भी बोझ रहता है तथा किन्ही कारणों से ऐसा ना होने पर इनकी स्थिति का पता लगाना भी मुश्किल है तथा उचित आय ना मिलने पर किसानों के पास ~~आत्महत्या~~ आत्महत्या के अलावा कोई विकल्प उन्हे खुद के पास नजर नही आता। सरकारो द्वारा किसानो को इस मानसिक स्थिति से बाहर निकालने के लिए उन्हे दया का पात्र मानकर उनका ऋण माफ कर दिया जाता है। ताकि वो सामाजिक रूप से भी बिना किसी भय के काम करे लेकिन यह कदम किसानो को ऊपर उठाने की बजाय उनमे एक नई प्रवृत्ति को जन्म दे देता है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

तथा यह नई प्रवृत्ति खुद उनके लिए तथा सरकार दोनो के लिए घाटे का सौदा साबित होती है। क्योंकि कर्ज लेने वाले अधिकतर बडे किसान होते है ना कि लघु तथा सीमान्त किसान। जबकि भारत मे लघु व सीमान्त किसानो की संख्या ज्यादा है तथा असल समस्या भी उन्ही की है। आत्महत्या तथा धरना प्रदर्शन ज्यादातर उन्ही के द्वारा होता है। इस बात पर मुझे किसी कवि की कुछ पंक्तियाँ स्मरण हो आती है-

" उन्हें धर्मगुरुओ ने बताया था
प्रवचनों मे
आत्महत्या करने वाला सीधा
नर्क जाता है।
तब भी वे आत्महत्या करते है,
क्या उनकी स्थिति नर्क से
बुरी है। "

सरकार के लिए यह स्थिति इसलिए अच्छी नही है क्योंकि इससे सरकार का राजकोषीय घाटा बढ़ता है। बैंको पर कर्ज N.P.A के रूप मे बढ़ता जाता

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

है। सरकारों द्वारा अन्य विकास योजनाओं के रूपयों में कटौती की जाती है। राज्यों तथा केन्द्र सरकार के मध्य आपसी टकराव बढ़ता है क्योंकि वर्तमान में कृषि प्रधान राज्यों की वित्तीय स्थिति अच्छी नहीं है जिससे वे केन्द्र से अधिक वित्तीय सहायता की मांग करते है।

अर्थशास्त्री, नीति आयोग, रिजर्व बैंक द्वारा सरकारों को समय-समय पर कहा गया है कि कर्ज माफी ना करे बल्कि कुछ और उपाय किए जाएं। क्योंकि एक सीमा से अधिक कर्ज माफी अर्थव्यवस्था के लिए खतरा है। नीति आयोग ने अपनी रिपोर्ट 'न्यू इंडिया @75' में भी किसानों की आय दोगुना करनी, कृषि का आधुनिकीकरण कर किसानों को न्याय देने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करनी है ऐसा लक्ष्य रखा गया है इसके लिए अनेक उपाय किए जा रहे हैं। ताकि

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

समावेशी विकास के साथ-साथ किसानों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य को समय पर पूरा किया जाए। तथा ऐसा तभी हो पाएगा जब नवाचार हो खेती में। अब समय आ गया है जब किसानों को परम्परागत खेती से निकालकर आधुनिक खेती की ओर ले जाया जाए। ~~क्योंकि~~ अमेरिका जैसा देश जहां किसान भारत के आधे है नई तकनीकों तथा नवाचार से उत्पादन में भारत से आगे हो सकते है तो हम क्यों नही। बस जरूरत है राजनेताओं के इच्छाशक्ति, प्रशासन की ~~जवाबदेही~~ उत्तरदायित्व तथा स्वच्छ कार्यशैली की तथा किसानों को नए प्रयोगों की। तथा इसके लिए कर्ज माफी जैसे साधनों को त्यागना होगा ~~क्योंकि~~ तथा ऐसी तकनीके विकसित करनी होगी जिनसे कम संसाधन तथा प्रतिकूल जलवायु दशाओं मे भी अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सके। क्योंकि जनसंख्या बढ़ने के साथ-2 हमारी मांगो तथा आवश्यकता मे वृद्धि होती जा रही है।

भारत को जैव प्रौद्योगिकी,

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी, कृषि प्रौद्योगिकी, खाद्य प्रौद्योगिकी के लिए नैनो तकनीक का प्रयोग कर नवाचार करने होंगे। तभी अधिक आय तथा उत्पादन प्राप्त किया जाएगा। सेंसर सिस्टम की सहायता से खेती तथा किसानों की दुर्दशा की दुर्दशा सही करनी होगी। GPS से मौसम संबन्धी समस्याओं यथा- चक्रवात, तुफान, सूखा, बारिश इत्यादि का पता लगाकर किसानों को पहले से चेतावनी देनी होगी ताकि वे समय रहते फसलों के लिए उपाय कर पाए। क्योंकि किसानों की दुर्दशा का एक मुख्य कारण - मानसून तथा मौसमी परिघटनाओं का होना भी है। आर्टिफिशयल इंटेलीजेंस तथा ब्लॉक चेन Technology का प्रयोग करके श्रम की लागत को कम करना होगा तथा बेहतर उपाय करने होंगे।

किसानों की उर्वरक तथा कीटनाशकों की खपत कम करके जैविक कृषि की तरफ बढ़ाना होगा। सरकार को यह प्रयास करना

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

चाहिए की बीजो की लागत कम हो, उर्वरको की लागत कम हो। समर्थन मूल्य को समय-समय पर पुनः परिवर्तन किया जाए, बाजार की उपलब्धता बढ़ायी जाए। किसानो के सामने एक अन्य समस्या अनाज के भंडारण की है क्योंकि कई बार किसान उचित दाम ना मिलने पर अनाज को मंडी तक लाते नही है लेकिन उनके पास वेयर हाउस या कोल्ड स्टोरेज जैसी सुविधा नही होती है। सरकार को इसके लिए ऐसी कोई व्यवस्था करनी चाहिए यथा - मंडी तक लाने ले जाने का खर्चा, कोल्ड स्टोरेज का निर्माण, एक निश्चित मात्रा में फसल का मूल्य उपलब्ध करवाना।

सरकार ने किसानो के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए है ताकि किसानो को फायदा हो। जैसे - प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना जिसमे लघु व सीमांत किसानो को न्यूनतम आय मिलेगी। अनेक राज्य सरकारों ने भी ऐसी ही योजनाएं जैसे तेलगाना ने

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

रायथु-बंधु योजना, ओडिशा की कालिया योजना किसानो की न्यूनतम आय के लिए है किसानों के लिए यूनिवर्सल बेसिक इनकम का प्रावधान हो।

सरकार द्वारा आनुवांशिकी संवर्द्धित फसलो को बढ़ावा देना चाहिए। बी.टी. कॉटन के बाद अभी तक इस क्षेत्र मे कोई खास नवाचार हुआ नहीं है। इजरायल तथा पौलैण्ड से नई तकनीकों को विश्वविद्यालयों व कृषि अनुसंधान केन्द्रों मे प्रशिक्षण देना चाहिए ताकि किसान नई तकनीकों का प्रयोग कर आधुनिक खेती करे। सरकार को चाहिए कि वह 'सोइल हेल्थ कार्ड', फसल बीमा योजना, e-NAM जैसे कार्यक्रमों को व्यापक स्तर पर निर्धारित करे। बाढ़ के पानी का समुचित उपयोग हो, नीम कोटिड यूरिया का प्रयोग अधिकाधिक हो इसलिए जनता को जागरुक कर उन्हे भी समावेशी विकास के लिए प्रेरित किया जाए तभी कृषि मे नवाचारों की अधिक पहुच संभव हो पाएगी।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

किसानो के लिए नीतियां बन्द एसी कमरो तथा शहरी तबके के हाथो मे ना हो बल्कि धरातलपर किसानो के लिए नवाचार तथा उन्नत प्रौद्योगिकी का उपयोग कर नीतियां बनायी जानी चाहिए तभी देश के असली कर्णधारो का विकास हो पाएगा। भारत की पहचान कृषि से है इस बात को भी भी भूलना नही चाहिए। जवाहरलाल नेहरु जी का कथन हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि-

"सब - कुछ इंतजार कर सकता है मगर खेती नही इंतजार कर सकती।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

खंड-B / SECTION-B

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. सर्वोच्च शिक्षा वह है जो सिर्फ हमें जानकारी नहीं देती अपितु प्रकृति के साथ हमारे सह-अस्तित्व को भी सुनिश्चित करती है।

   The best education is that which not only gives us information, but also ensures our coexistence with nature.

2. राजनीति में आदर्श अपेक्षित भी है और उपेक्षित भी।

   Ideals in politics are required as well as neglected.

3. समान के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिये और असमान के साथ असमान।

   Equals should be treated equally and unequals unequally.

4. उस समाज में स्वतंत्रता अर्थहीन है, जिसमें गलती करने की आज़ादी न हो।

   Liberty is meaningless in that society where there is no freedom to commit mistakes.

(1) सर्वोच्च शिक्षा वह है जो सिर्फ हमें जानकारी नही देती अपितु प्रकृति के साथ हमारे सह-अस्तित्व को भी सुनिश्चित करती है।

"मैं ज्ञानी इस अर्थ में हूं कि मैं यह जानता हूं कि मैं कुछ भी नही जानता।"

अरस्तु का यह कथन भाव व्यक्त करता है कि मनुष्य को हमेशा कुछ भी नया सीखता रहना चाहिए तथा शिक्षा ही वह साधन है जो मनुष्य का सर्वांगीण विकास कर सकती है। तथा यदि मनुष्य शिक्षा में सर्वोच्च मूल्यो को आत्मसात कर ले तो वह ना केवल स्वयं का विकास कर सकता है अपितु जगत विकास में भी योगदान कर सकता है। मनुष्य के इन्ही मूल्यों में से एक मूल्य प्रकृति के साथ सामंजस्य व सह अस्तित्व

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

को सुनिश्चित करना है ताकि धारणीय व समावेशी विकास हो सके। क्योंकि प्रकृति मनुष्य को अपने पूर्वजों से उत्तराधिकार मे मिली है जिसमें आने वाली पीढ़ी का भी हिस्सा है तथा हम प्रकृति के संरक्षक है।'

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

भारतीय संस्कृति से लेकर समस्त विश्व की तमाम सभ्यताओं में प्रकृति को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' अर्थात सम्पूर्ण धरा मेरा परिवार है इस धारणा में पृथ्वी से आशय सम्पूर्ण प्रकृति तथा मानव दोनों से है।

फिर ऐसा क्या हुआ कि मनुष्यों ने केवल स्वयं के विकास के लिए प्रयास किए तथा प्रकृति को विनाश की ओर धकेल दिया। विकास का मस्मासुर मॉडल बिना प्रकृति के विनाश का मॉडल बनता जा रहा है। इसकी बानगी हमें भारत में उत्तराखण्ड में आई विकराल आपदा से देखने को मिलती है तथा विश्व की बात करें तो हाल ही में अमेजन के जंगलों में लगी आग या समुद्र की जैव विविधता को प्लास्टिक कचरे से खात्मे

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

की ओर बढ़ता जाना। इन उदाहरणों से हमें केवल यह पता चलता है कि विकास की दौड़ में हम केवल शिक्षा को ग्रहण करते जा रहे है इसमें मूल्य आधारित शिक्षा कही नही है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या हमेशा से ही ~~भारत में~~ मनुष्य स्वार्थी था जिसने अपने फायदे के लिए प्रकृति का अन्धाधुध प्रयोग किया।

यदि हम हमारे प्राचीन इतिहास पर नजर डाले तो हमें इसका उत्तर नही मे मिलेगा। हमारे पुराणों, ग्रन्थो में प्रकृति को पूजक माना गया है। ऋग्वेद में इत्यादि में प्रकृति को पूजक मानते हुए यथा- बरगद की पूजा, पीपल, नीम इत्यादि की पूजा का वर्णन मिलता है। भारतीय प्राचीन इतिहास में प्रकृति तथा मानव के बीच सामंजस्य को बताया गया है। अनेको ग्रन्थों तथा पुराणों में इस बात का जिक्र है कि प्राचीन मोहरों पर पशु, पेड़-पौधे, फूल-पत्तीयां अंकित थी। यूरोप के प्रबोधन काल में भी प्रकृति के महत्व का जिक्र मिलता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिख चाहिये।
(Candidate must n write on this marg

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

मुझे याद है कि गांव में रात को पेड़ों को छूने से घर के बजुर्ग तथा बड़े मना कर देते थे। तुलसी के पत्ते तोड़ने पर चुटकी बजाकर कोई मंत्र पढ़कर पौधे से माफी मांगना। ये सभी यह परिलक्षित करते हैं कि कुछ समय पहले तक भी मानव में प्रकृति के साथ सह-अस्तित्त्व की धारणा जाने- अनजाने में थी। फिर आज के भौतिक व उपभोगवादी समय में जीवन शैली में परिवर्तन के साथ - साथ मनुष्य ने अपने ज्ञान को तो समय के साथ बढ़ाया लेकिन मूल्यों को कहीं ना कहीं पीछे छोड़ दिया। तथा हमारे मूल्यों को आगे बढ़ने की होड़ में हमने कहीं पीछे छोड़ दिया। हमें विलासितापूर्ण जीवन तो मिला लेकिन उपहार के रूप में अनेको पर्यावरण संकट भी मिले।

'शिक्षा अपने अज्ञान की प्रगतिशील खोज है।' यह कथन बिल्कुल सही साबित हो जाए यदि मनुष्य अपनी शिक्षा में मूल्यों की महत्ता समझ जाए तो। मानव मूल्य मनुष्य के विकास के साथ-साथ प्रकृति के साथ सांमजस्य को बनाए रखने में सेतु का काम करेगें। शिक्षा प्रणाली

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

में सामुदायिकता, ~~सामंजस्य~~। सामंजस्यता का अभाव सहअस्तित्व की ~~सेह~~ राह में रोड़ा है।

यदि मनुष्य शिक्षा या प्रकृति दोनों में से किसी को भी साधन के रूप में लेगा तो सकारात्मक तथा नकारात्मक परिणाम दोनों देखने को मिलेगें। शिक्षा का अंधाधुंध प्रयोग मनुष्य को हिटलर या ओसामा की तरह खतरे पैदा करेगा जिसमें एक दिन स्वयं मनुष्य का ही अस्तित्व दांव पर लग जाएगा। प्रकृति भी साधन के रूप में लेने पर अपनी लीला जरूर दिखाएगी तथा ऐसा समय-समय पर इंसानों ने देखा भी है। मुझे एक कहावत याद आ जाता है - ~~स्वर्ग~~ 'इंसानों का किया-धरा सूद समेत वापिस आता है।'

वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था को नफे-नुकसान के आधार पर देखा जाता है जिसमें मूल्यों की पूर्णतया अनदेखी की जाती है। शिक्षा तभी सार्थक कहलाएगी जब शिक्षा में मनुष्य के सर्वांगीण विकास के पहलु भी शामिल हो। इसीलिए भारतीय संविधान में भी पेड़-पौधों से सम्बन्धित प्रावधान किए गए है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

"प्रकृति हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए, लालचों को नही।" गांधीजी का यह कथन इस बात को दर्शाता है कि प्रकृति के मनुष्य का समावेशन जरूरी है। क्योंकि मूल्य आधारित शिक्षा ना केवल क्षमतावान बनाती है अपितु निर्देशित भी करती है। मनुष्य का सर्वांगीण विकास तभी होगा जब मनुष्य में दया, सहयोग, परोपकारिता, सह-अस्तित्व का भाव होगा। यदि किसी व्यक्ति मे नैतिक शिक्षा नही होगी तो वह समाज के संकट का आमंत्रण है।

प्रकृति ने मनुष्य को समय-2 पर समाज के संकट से रूबरू करवाया है। आज विद्यमान अनेक समस्याएं जैसे - ग्लेशियर का पिघलना, तापमान का बढना, ग्रीन हाऊस गैसो मे वृद्धि, समुद्र के जल स्तर मे वृद्धि। खाद्यान्न संकट इत्यादि प्रकृति को अनदेखा करने के नतीजे है। वस्तुतः वह दिन दूर नही जब कंक्रीट के ये घर, प्रदूषित हवा तथा नालों की दुर्गंध ही बचेगी। यह विचार करने योग्य बात है कि जिस प्रकृति ने मनुष्य को बनाया, संसाधन उपलब्ध करवाए

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

आज उसी के अस्तित्व को मनुष्य दाँव पर लगा रहा है।

यदि मनुष्य अभी भी नहीं संभला तो पृथ्वी मनुष्य का अस्तित्व ही ~~खत्म~~ खत्म हो जाएगा तथा अब यह समझना होगा कि केवल किताबी ज्ञान ही सब-कुछ नहीं है। मनुष्य को पर्यावरण तथा उसके महत्व को समझकर शिक्षा प्रणाली में उचित स्थान देना होगा ताकि प्रदूषण मुक्त पर्यावरण तथा खुली हवा में रहा जा सके।

जनता को स्वयं को जागरूक बनना होगा तथा सतत् विकास पर ध्यान देना होगा। सरकार ने इस लिए स्कूलों तथा कॉलेजों में पर्यावरण पखवाड़ा तथा अन्य कार्यक्रम चलाए है जिन पर केवल खानापूर्ति ना हो बल्कि समुचित ध्यान दिया जाए। पानी को स्वच्छ रखा जाए ताकि वे स्वास्थ्य सही बना रहे। हवा को साफ रखने के लिए एन॰ सी॰ ए॰ पी॰ जैसे कार्यक्रम चलाए गए है।

गंगा को 'जीवित व्यक्ति' का दर्जा प्रदान किया गया है क्योंकि भारत में

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिख चाहिये।

(Candidate must no write on this margi

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

सबसे पवित्र माने जाने वाली गंगा नदी प्रदूषण के कारण समाप्ति की ओर जा रही थी। गंगा-जमुना तहजीब की हमारी संस्कृति केवल किस्सों में रह जाती क्योंकि यमुना नदी पहले ही एक नाला बन चुकी है। वहीं दूर नहीं जब पता चले कि सरस्वती नदी की तरह दोनों नदियां गायब हो चुकी हैं। प्रकृति का संरक्षण जैसे आवश्यक मूल्य का पतन मानव के स्वयं के अस्तित्व के लिए खतरा है।

"जब सारे पेड़ काट दिए जाएंगे, नदी का पानी प्रदूषित हो जाएगा, धरती की आखिरी मछली भी खत्म हो जाएगी तब हम कहां होंगे।"

आज हमें जरूरत है शिक्षा में मूल्यों के उचित समावेशन की क्योंकि प्रकृति को साथ लेकर ही मनुष्य भविष्य के लिए दीर्घकालिक विकास कर पाएगा अन्यथा मानव स्वयं ही संकट में आ जाएगा।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation